E-ISSN: 2706-8927
P-ISSN: 2706-8919
www.allstudyjournal.com
IJAAS 2023; 5(4): 41-44
Received: 09-02-2023
Accepted: 16-04-2023

दीपा चतुर्वेदी
शोध छात्रा शिक्षा, लाइफ लॉंग लर्निंग विभाग, अवधेश प्रताप सिंह वि.वि., रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

डॉ. रंजना तिवारी
विभागाध्यक्ष शिक्षा, श्रीयुत्त स्नातकोत्तर कालेज, गंगेव, जिला, रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

Corresponding Author:
दीपा चतुर्वेदी
शोध छात्रा शिक्षा, लाइफ लॉंग लर्निंग विभाग, अवधेश प्रताप सिंह वि.वि., रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

ग्रामीण व शहरी प्रारंभिक शिक्षा स्तर के विद्यार्थियों की अप्रवेशी दर का तुलनात्मक अध्ययन

दीपा चतुर्वेदी, डॉ. रंजना तिवारी

DOI: https://doi.org/10.33545/27068919.2023.v5.i4a.975

सारांश
इस शोध पत्र के द्वारा ग्रामीण व शहरी प्रारंभिक शिक्षा स्तर के विद्यार्थियों की अप्रवेशी दर का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। शोध क्षेत्र के प्रत्येक विकासखण्ड से न्यादर्श के रूप में चयनित अनूपपुर जिले के सभी विकासखण्डों से 8–8 विद्यालय कुल 32 विद्यालयों, प्रत्येक विद्यालय से 10 छात्र एवं 10 छात्राएं कुल 640 का चयन दैव निदर्शन पद्धति से किया किया गया है। शोध क्षेत्र के ग्रामीण क्षेत्र के प्रारंभिक शिक्षा स्तर के विद्यार्थियों की अप्रवेशी दर में सार्थकता का औसत मध्यमान 30.00 है तथा मानक विचलन 8.98 है और शहरी क्षेत्र के प्रारंभिक शिक्षा स्तर के विद्यार्थियों की अप्रवेशी दर में सार्थकता का औसत मध्यमान 32.78 है तथा मानक विचलन 8.53 है। शोध क्षेत्र के प्रारंभिक शिक्षा स्तर के बालकों के अप्रवेशी दर में सार्थकता का औसत मध्यमान 32.06 है तथा मानक विचलन 7.38 है और बालिकाओं के अप्रवेशी दर में सार्थकता का औसत मध्यमान 32.16 है तथा मानक विचलन 7.52 है।

कुटशब्दः अनूपपुर जिला, प्रारंभिक शिक्षा स्तर, विद्यार्थी, अप्रवेशी दर, ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र

1. प्रस्तावना
ज्ञान की प्राप्ति शिक्षा से होती है। शिक्षा मानव विकास का प्रथम सोपान है। शिक्षा के द्वारा हम शिशु के अन्दर प्रसुप्त ज्ञान राशि को उद्घाटित करते हैं। शिशु के अन्दर सुप्त प्रतिभा, असीमित क्षमता एवं अतुलित गुण–सम्पदा का भण्डार निहित होता है। वह निर्विकार भाव से इस संसार में प्रवेश कर यहाँ के घर, परिवार, वातावरण और चतुर्दिक फैले हुए परिवेश से, ज्ञात–अज्ञात रूप में, संस्कारित होता रहता है। यहाँ तक कहा गया है कि गर्भस्थ शिशु पर माँ के मनोभावों का प्रभाव पड़ता है। शिशु संस्कार के निस्पृह भाव से पदार्पण करता है तथा माता–पिता के व्यवहार तथा आचरण से संस्कारित होता है, शिक्षित होता है। शिशु को श्रेष्ठ संस्कारों से संस्कारित करना परमावश्यक है, क्योंकि यही शिशु भविष्य में परिवार, समाज और राष्ट्र का संचालक एवं नियामक बनेगा। अतः शिक्षा की अनिवार्यता अपरिहार्य रूप से स्वयं स्वीकृत है।
प्रारम्भिक शिक्षा जो शिक्षा का प्रारम्भिक स्तर है, आज विश्व के सभी देशों में प्रारम्भिक शिक्षा को जन–जन को सुलभ बनाने के लिए सार्थक प्रयास किये जा रहे हैं। यही कारण है कि प्रारम्भिक शिक्षा स्तर पर जितने बालक–बालिकाएँ अध्ययन हेतु विद्यालयों में सुलभ होते हैं उतना अन्य किसी स्तर पर नहीं। इसीलिए प्रारम्भिक स्तर के विद्यालयों की संख्या माध्यमिक एवं उच्च शिक्षण संस्थाओं की तुलना में बहुत अधिक है। आज भी बहुत से अविकसित व विकासषील राश्ट्रों के अधिकांष बालक–बालिकाएँ मात्र प्रारम्भिक स्तर की शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात् जीवन के मुख्य धारा से जुड़ जाते हैं। चूँकि इसी शैक्षिक स्तर पर ही व्यक्ति के शैक्षिक, सामाजिक, चारित्रिक तथा नैतिक स्तर का विकास सुनिश्चित हो जाता है। इसीलिए इस स्तर पर कार्यरत शिक्षकों का उत्तरदायित्व अन्य शैक्षिक स्तरों के शिक्षकों की तुलना में कुछ अधिक उपयोगी होता है। इस स्तर पर अध्ययनरत बालक–बालिकाएँ कच्ची मिट्टी के समान होते हैं। शिक्षक शिल्पी के रूप में उन्हें जो आकृति प्रदान करता है वे उसी साँचे वाली आकृति में ढलकर अपने आपकों समाज की मुख्य धारा से जोड़ लेते हैं।

2. अध्ययन की आवश्यकता
शोधार्थी द्वारा प्रस्तुत शोध कार्य न केवल अनूपपुर जिले वरन् सम्पूर्ण मध्यप्रदेश के ग्रामीण व शहरी प्रारंभिक शिक्षा स्तर के विद्यार्थियों की अप्रवेशी दर का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकेगा तथा ऐसे सुझाव शोध कार्य के उपरान्त दिये जा सकेंगे जिनका प्रयोग कर राज्य सरकार माध्यमिक शिक्षा स्तर पर योजना के क्रियान्वयन को प्रभावी ढंग से विकसित करने में समर्थ हो सकता है।

शहडोल संभाग का अनूपपुर जिला आदिवासी प्रधान जिला है, जो शैक्षिक दृष्टिकोण से अपेक्षाकृत पिछड़ा जिला है। विशेषकर बालिकाओं में शैक्षिक स्थिति बहुत संतोषजनक नहीं है। यहाँ पर प्रारंभिक शिक्षा की सफलता के लिए किये जा रहे सभी प्रयासो तथा उक्त सम्बर्ग के बालिका शिक्षा के समग्र विकास के लिए वास्तविक स्थिति का अध्ययन तथा उसमें वांछित सुधार हेतु सुझाव देने के लिए शैक्षिक शोध करने की आवश्यकता है।

3. उद्देश्य
प्रस्तुत शोध कार्य निम्नलिखित उद्देश्यों को ध्यान मे रखकर किया गया है:–

1. शोध क्षेत्र के ग्रामीण व शहरी प्रारंभिक शिक्षा स्तर के विद्यार्थियों की अप्रवेशी दर का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. शोध क्षेत्र के प्रारंभिक शिक्षा स्तर के बालक व बालिकाओं के अप्रवेशी दर का तुलनात्मक अध्ययन करना।

4. शोध की परिकल्पनाएँ
परिकल्पना शोध समस्या एवं समस्या समाधान के बीच की कड़ी है। परिकल्पनाा से तात्पर्य है कि किसी भी समस्या के हल के बारे में पूर्वानुमान लगाना। परिकल्पना एक ऐसा पूर्व विचार है, जो किसी सामान्य के संबंध में बना लिया जाता है और जिसकी सार्थकता की परीक्षा के लिए आवश्यक तथ्यों को एकत्रित किया जाता है।

प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोधार्थी का पूर्वानुमान परिकल्पनाओं के रूप में निम्नवत् है:–

1. शोध क्षेत्र के ग्रामीण व शहरी प्रारंभिक शिक्षा स्तर के विद्यार्थियों की अप्रवेशी दर में कोई सार्थक अन्तर नही है।
2. शोध क्षेत्र के प्रारंभिक शिक्षा स्तर के बालक व बालिकाओं के अप्रवेशी दर में कोई सार्थक अन्तर नही है।

5. शोध समस्या का सीमांकन
प्रस्तुत शोध कार्य का क्षेत्र जिला अनूपपुर है। इसके अन्तर्गत 4 विकासखण्ड – अनूपपुर, पुष्परागढ़, जैतहरी व कोतमा है। अतः जिला अन्तर्गत स्थित प्रारंभिक शिक्षा स्तर के विद्यार्थियों की अप्रवेशी दर का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। अनूपपुर जिला का क्षेत्र व्यापक है, जिस कारण सभी प्रारंभिक स्तर के विद्यालयों का अध्ययन करना संभव नहीं है, इसलिए जिले के सभी विकासखण्डों से 8–8 विद्यालय कुल 32 विद्यालयों का चयन दैव निदर्शन द्वारा अध्ययन हेतु किया गया है।

6. शोध विधियाँ
शोध कार्य को संपूर्णता प्रदान करने हेतु कई प्रकार की शोध विधियों का उपयोग किया जाता है। शोध विधियों के मुख्य प्रकार ऐतिहासिक, वर्णनात्मक एवं प्रयोगात्मक है। शोध कार्य के अनुरूप प्रत्येक शोध विधि की अपनी विशेषताएँ एवं उपयोगिता है। शैक्षिक अनुसंधान की दृष्टि से प्रस्तुत शोध कार्य मुख्य रूप से सर्वेक्षणात्मक (वर्णनात्मक) होगा। शोध अध्ययन में निम्नलिखित विधियों एवं उपकरणों का उपयोग किया गया है –

6.1 सर्वेक्षण विधि – प्राथमिक स्त्रोतों से प्रदत्तों के संकलन एवं पूर्व संचालित प्रदत्तो के सत्यापन हेतु शोध क्षेत्र के प्रारंभिक शिक्षा स्तर के विद्यालयों का सर्वेक्षण किया गया है।

6.2 सांख्यिकी विधि – प्रयुक्त शोध उपकरणों से प्राप्त प्रदत्तों के सारणीयन के उपरान्त आवश्यकतानुसार माध्य, माध्यिका एवं बहुलक, दो चरों में सार्थक अन्तर के आंकलन हेतु मध्यमान विचलन, टी–परीक्षण जैसी सांख्यिकी विधियों का प्रयोग किया गया है।

शोध उपकरण: आंकड़े प्राप्त करने हेतु शाला अभिलेख अवलोकन पत्रक का प्रयोग किया गया है।

7. न्यादर्श चयन
अनुसंधान तथा शोध के प्रयोग का प्रारूप न्यादर्श की प्रविधि पर आधारित होता है। एक उत्तम प्रकार के शोध कार्य में न्यादर्श तथा उसकी जनसंख्या संबंधी समस्त सूचनाओं को दिया जाता है। शोध कार्य को सार्थक करने के लिए न्यादर्श का चयन किया जाता है। न्यादर्श के रूप में चयनित अनूपपुर जिले के सभी विकासखण्डों से 8–8 विद्यालय कुल 32 विद्यालयों, प्रत्येक विद्यालय से 10 छात्र एवं 10 छात्राएं कुल 640 का चयन दैव निदर्शन पद्धति से किया किया गया है। इस प्रकार यह अध्ययन दोनों दृष्टियों से सैद्धान्तिक एवं अनुभवाश्रित परिपूर्ण होगा।

8. पूर्ववर्ती शोध अध्ययनों का विवरण
किसी भी शोध कार्य को सोद्देश्य तथा अधिक प्रभावी बनाने के दृष्टिकोण से यह आवश्यक हो जाता है कि शोधार्थी अपनी शोध समस्या के समरूप पूर्व में किए गये अन्य शोध कार्यों के बारे में संक्षिप्त जानकारी प्राप्त कर ले। इसी दृष्टिकोण से शोधार्थी ने ग्रामीण व शहरी प्रारंभिक शिक्षा स्तर के विद्यार्थियों की अप्रवेशी दर का तुलनात्मक अध्ययन पर किये गये कुछ प्रमुख तथा सहज रूप से उपलब्ध पूर्व शोध अध्ययनों के विषय–वस्तु की जानकारी प्राप्त करने का प्रयास किया है। संक्षेप में उनका विवरण निम्न है – अग्रवाल, आर. एवं अरीना, विपिन (1989)[1], कपिल, एच.के. (1996)[2], खुल्लर, के.के. (1988)[3], कौल, लोकेश (1998)[4], तिवारी, डॉ.(श्रीमती) रंजना (2016)[5], पाठक, पी.डी. (1998)[6], सिंह, सोना एवं डॉ. जय सिंह (2019)[7]।

9. शोध क्षेत्र का परिचय
मध्यप्रदेश अनूपपुर जिला 15 अगस्त 2003 को नया जिला बना हैं। सम्पूर्ण विश्व के मानचित्र पर इस जिले की स्थिति 22°07′ से 23°25′ उत्तरी अक्षांश तथा 81°10′ से 82°10′ पूर्वी देशांतर के मध्य स्थित है। भौगोलिक दृष्टि से अनूपपुर जिले का क्षेत्रफल 3669 वर्ग कि.मी. है। जिले के अन्तर्गत कुल तहसीलों की संख्या 04 है – पुष्पराजगढ़, अनूपपुर, जैतहरी व कोतमा है।

10. परिणामों का विश्लेषण एवं व्याख्या :
शोधार्थी द्वारा किया गया कोई भी शोध कार्य सही अर्थों में तभी प्रतिबिम्बित होता है, जब शोधार्थी द्वारा उस समस्या की वास्तविक स्थिति का मूल्यांकन किया जाय। इसके लिये यह आवश्यक है, कि शोधार्थी द्वारा शोध अध्ययन में उपयोग किये गये समस्त शोध उपकरणों द्वारा प्राप्त जानकारियों को व्यवस्थित क्रम में सारणीबद्ध किया जाय, निम्नानुसार है–

परिकल्पना 1: "शोध क्षेत्र के ग्रामीण व शहरी प्रारंभिक शिक्षा सतर के विद्यार्थियों की अप्रवेशी दर में कोई सार्थक अन्तर नही है।"

सारणी 1: ग्रामीण व शहरी प्रारंभिक शिक्षा स्तर के विद्यार्थियों की अप्रवेशी दर का तुलनात्मक अध्ययन

समूह		ग्रामीण	शहरी
समूह की संख्या (छ)		16	16
मध्यमान (ड)		30.00	32.78
मानक विचलन ैक)		8.98	8.53
क्रान्तिक निष्पत्ति (श्जश्द्ध		0.95	
निष्कर्ष	0.05 सार्थकता स्तर पर	सार्थक अन्तर नहीं है	
	0.01 सार्थकता स्तर पर	सार्थक अन्तर नहीं है	

$df = (N_1-1) + (N_2-1)$

$df = (16-1) + (16-1) = 15 + 15 = 30$

उपरोक्त सारणी क्रमांक 1 मे न्यादर्श में चयनित शोध क्षेत्र के ग्रामीण व शहरी प्रारंभिक शिक्षा स्तर के विद्यार्थियों की अप्रवेशी दर से सम्बधित प्रदत्त संकलित किये गये हैं। संकलित प्रदत्त प्राथमिक स्त्रोत पर आधारित है। सारणी में संकलित प्रदत्तों का सांख्यिकीय विश्लेषण से स्पष्ट है कि शोध क्षेत्र के ग्रामीण क्षेत्र के प्रारंभिक शिक्षा स्तर के विद्यार्थियों की अप्रवेशी दर में सार्थकता का औसत मध्यमान 30.00 है तथा मानक विचलन 8.98 है और शहरी क्षेत्र के प्रारंभिक शिक्षा स्तर के विद्यार्थियों की अप्रवेशी दर में सार्थकता का औसत मध्यमान 32.78 है तथा मानक विचलन 8.53 है।

30 कि पर सार्थकता के लिए श्जश का मानक मान 0.01 विश्वास स्तर पर 2.75 तथा 0.05 विश्वास स्तर पर 2.04 है, जबकि अध्ययन से प्राप्त श्जश का मान 0.95 है, जो कि दोनो विश्वास स्तरों के मानों से कम है। अतः शोध क्षेत्र के ग्रामीण व शहरी प्रारंभिक शिक्षा स्तर के विद्यार्थियों की अप्रवेशी दर में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। अतः परिकल्पना क्र. 1 सत्यापित होती है।

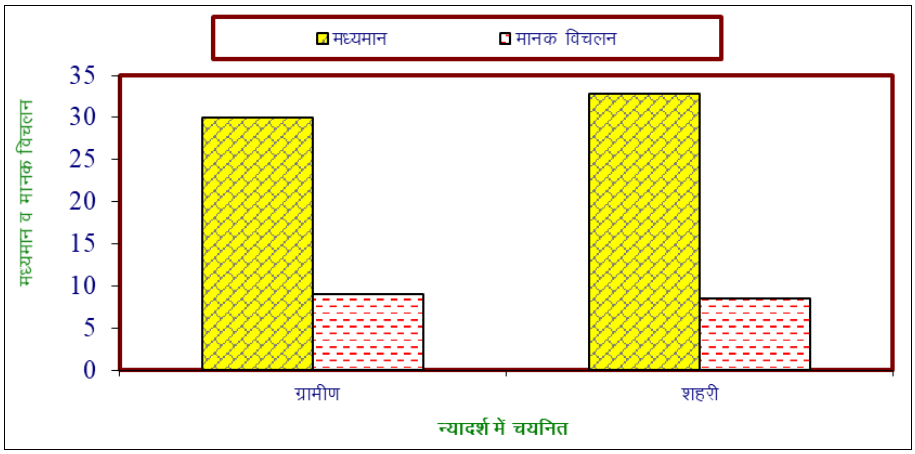

आरेख 1: ग्रामीण व शहरी प्रारंभिक शिक्षा स्तर के विद्यार्थियों की अप्रवेशी दर का तुलनात्मक अध्ययन

परिकल्पना 2: "शोध क्षेत्र के प्रारंभिक शिक्षा स्तर के बालक व बालिकाओं के अप्रवेशी दर में कोई सार्थक अन्तर नही है।"

सारणी 2: शोध क्षेत्र के प्रारंभिक शिक्षा स्तर के बालक व बालिकाओं के अप्रवेशी दर का तुलनात्मक अध्ययन

समूह		बालक	बालिकाएँ
समूह की संख्या (N)		320	320
मध्यमान (M)		32.06	32.16
मानक विचलन (SD)		7.38	7.52
क्रान्तिक निष्पत्ति ('t')		0.16	
निष्कर्ष	0.05 सार्थकता स्तर पर	सार्थक अन्तर नहीं है	
	0.01 सार्थकता स्तर पर	सार्थक अन्तर नहीं है	

$df = (N_1-1) + (N_2-1)$

$df = (320-1) + (320-1) = 319 + 319 = 638$

उपरोक्त सारणी क्रमांक 2 मे न्यादर्श में चयनित शोध क्षेत्र के प्रारंभिक शिक्षा स्तर के बालक व बालिकाओं के अप्रवेशी दर से सम्बधित प्रदत्त संकलित किये गये हैं। संकलित प्रदत्त प्राथमिक स्त्रोत पर आधारित है। सारणी में संकलित प्रदत्तों का सांख्यिकीय विश्लेषण से स्पष्ट है कि शोध क्षेत्र के प्रारंभिक शिक्षा स्तर के बालकों के अप्रवेशी दर में सार्थकता का औसत मध्यमान 32.06 है तथा मानक विचलन 7.38 है और बालिकाओं के अप्रवेशी दर में सार्थकता का औसत मध्यमान 32.16 है तथा मानक विचलन 7.52 है।

30 कि पर सार्थकता के लिए श्जश का मानक मान 0.01 विश्वास स्तर पर 2.58 तथा 0.05 विश्वास स्तर पर 1.96 है, जबकि अध्ययन से प्राप्त श्जश का मान 0.16 है, जो कि दोनो विश्वास स्तरों के मानों से कम है। अतः शोध क्षेत्र के प्रारंभिक शिक्षा स्तर के बालक व बालिकाओं के अप्रवेशी दर में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। अतः परिकल्पना क्र. 2 सत्यापित होती है।

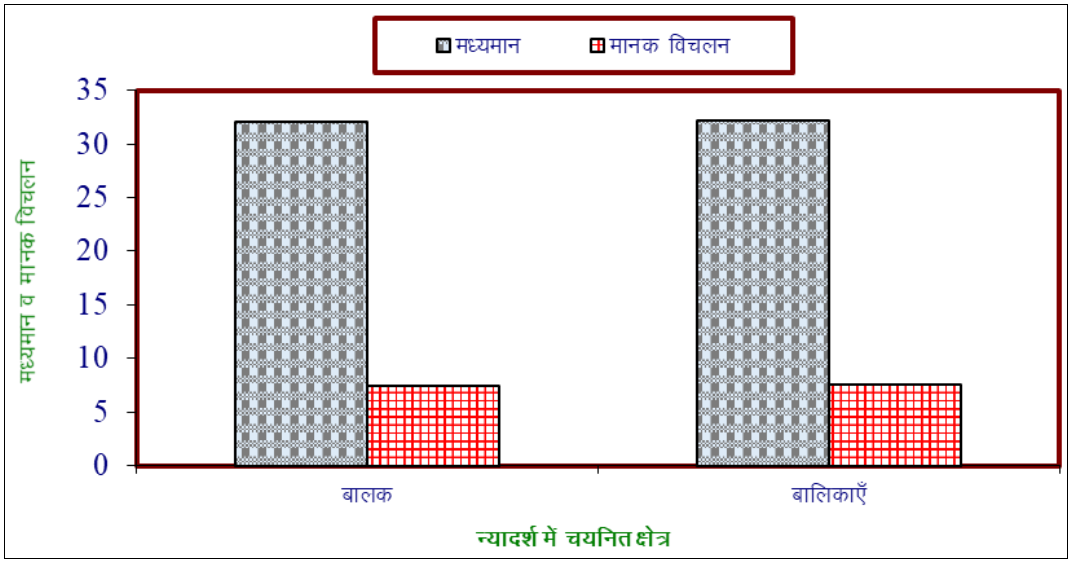

आरेख 2: शोध क्षेत्र के प्रारंभिक शिक्षा स्तर के बालक व बालिकाओं के अप्रवेशी दर का तुलनात्मक अध्ययन

निष्कर्ष

अनुसंधान के परिणामों से प्राप्त निष्कर्ष के आधार पर यह ज्ञात हुआ कि शोध क्षेत्र के शोध क्षेत्र के ग्रामीण व शहरी प्रारंभिक शिक्षा स्तर के विद्यार्थियों की अप्रवेशी दर में कोई सार्थक अन्तर नहीं है और साथ ही प्रारंभिक शिक्षा स्तर के बालक और बालिकाओं के अप्रवेशी दर में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

संदर्भ

1. अग्रवाल, आर. एवं अरीना, विपिन (1989): मनोविज्ञान एवं षिक्षा में मापन व मूल्यांकन, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा.
2. कपिल, एच.के. (1996): सांख्यिकी के मूल तत्व, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा.
3. खुल्लर, के.के. (1988): राष्ट्रीय शिक्षा नीति, नई दिल्ली विज्ञापन एवं दृष्य प्रसार निर्देशालय.
4. कौल, लोकेश (1998): शैक्षिक अनुसंधान की कार्य प्रणाली, विकास पब्लिसिंग हाउस प्रा.लि. नई दिल्ली.
5. तिवारी, डॉ. (श्रीमती) रंजना रीवा जिले के गंगेव विकासखण्ड में हाई स्कूल में अध्ययनरत अनुसूचित जाति के बालिकाओं में संचार साधनों के प्रचार–प्रसार द्वारा शिक्षा के प्रति चेतना जागृत का विश्लेषणात्मक अध्ययन Research Expo International Multidisciplinary Research Journal. 2016 Jan;4(1):69-77.
6. पाठक, पी.डी. (1998): भारतीय शिक्षा का विकास एवं समस्याएँ, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा.
7. सिंह, सोना एवं डॉ. जय सिंह अनूपपुर जिले में प्रारंभिक शिक्षा स्तर अनुसूचित जनजाति वर्ग के विद्यार्थियों के अधिगम स्तर का तुलनात्मक अध्ययन, International Journal of Advanced Research and Development. 2019 March;4(2):63-65.